12.1 परिचय

साख का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द 'Credit' है जो लैटिन भाषा के Credo से उत्पन्न है जिसका तात्पर्य है, 'मैं विश्वास करता हूँ' (I believe)। इस प्रकार साख का शाब्दिक अर्थ विश्वास अथवा भरोसा होता है। आर्थिक भाषा में साख शब्द का प्रयोग प्रायः उधार लेने या स्थगित भुगतान (Deferred Payment) के लिए होता है। वैसे (Credit) शब्द का प्रयोग तीन अर्थों में किया जा सकता है–उधार लेने-देने में, व्यापार में, किसी व्यक्ति की साख का अनुमान लगाने में, तथा हिसाब लेखों में, नाम (Debit) अथवा जमा की प्रविष्टियों में। साधारण बोलचाल में सभी प्रकार का विश्वास साख हो सकता है, परन्तु अर्थशास्त्र में साख का अभिप्राय केवल देनदारी अथवा शोधन-क्षमता के विकास से होता है। वर्तमान में मुद्रा अथवा मूल्यवान वस्तुएँ तथा सेवाएँ भविष्य में भुगतान करने की प्रतिज्ञा का आधार पत्र प्राप्त करना ही साख है। इस प्रकार व्यावहारिक रूप में केवल व्यापारिक लेन-देन तथा बैंकों से ऋण आदि की क्रियाओं को ही साख के सौदों में सम्मिलित किया जाता है।

12.2 साख की परिभाषा

विभिन्न अर्थशास्त्रियों द्वारा दी गयी साख की परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं–

Jevons के अनुसार, ''साख शब्द का अर्थ भुगतान को स्थापित करना है।'' (Postponement of Payment)'

Thomas के अनुसार ''साख वह विश्वास है जिसके आधार पर एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को अपनी बहुमूल्य वस्तुएँ तथा सेवाएँ देता है, भले ही ये वस्तुएँ मुद्रा, सेवा तथा साख मुद्रा क्यों न हो और आशा करता है कि वह व्यक्ति इनको वापस लौटा देगा।''

Gide के शब्दों में 'साख एक ऐसा विनिमय कार्य है जो एक निश्चित अवधि के उपरांत भुगतान करने पर पूर्ण होता है।''

इन सभी परिभाषाओं में साख को विश्वास पर आधारित स्थगित भुगतान माना गया है।

साख को व्यक्ति के ऋण प्राप्त करने की योग्यता के रूप में परिभाषित करते हुए Kinley ने लिखा है ''साख से हमारा अभिप्राय किसी भी व्यक्ति से होता है जिसके द्वारा वह अन्य किसी व्यक्ति को भविष्य में भुगतान करने की प्रतिज्ञा पर अपनी आर्थिक वस्तुएँ समर्पित करने के लिए प्रेरित करता हैं। अत: साख ऋणी का एक गुण अथवा शक्ति है।''

साख को भुगतान पाने का अधिकार अथवा भुगतान करने का दायित्व मानते हुए Kent ने लिखा है, ''साख की परिभापा वस्तुओं के तात्कालिक हस्तांतरण पाने के अधिकार अथवा भुगतान करने के दायित्व के रूप में की जा सकती है।''

बैंकों द्वारा साख निर्माण को ध्यान में रखते हुए G. D. H. Coley ने लिखा है, ''साख वह क्रय-शक्ति है जो आय से प्राप्त नहीं होती, अपितु वित्तीय संस्थाओं के द्वारा जमाकर्त्ताओं की बैंकों में जमा निष्क्रिय आय को सक्रिय बनाकर अथवा कुल क्रय-शक्ति में वास्तविक वृद्धि करके इसका निर्माण किया जाता है।

Scanned with CamScanner

(Credit is purchasing power not derived from income but created by financial institution either as an offset to idle incomes held by the depositors in the banks, of as a net addition to the total amount of purchasing power—G. D.H. Coley Monev its Presents and Future p. 308.)

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर साख के आवश्यक तत्त्व (essential Element) ये हैं :-

1. साख विश्वास पर आधारित होती है ।
2. धन, वस्तु अथवा सेवाओं का हस्तांतरण एक व्यक्ति अथवा संस्था को किया जाना आवश्यक है, केवल हस्तांतरण की प्रतिज्ञा यथेष्ट नहीं होती ।
3. हस्तांतरित धन की वापसी तथा माल या सेवा का भुगतान तत्काल नहीं होता, बल्कि भविष्य में किसी निश्चित अथवा अनिश्चित तिथि पर होता है, तथा
4. बैंकों द्वारा साख का निर्माण किया जाता है ।

साख देने अथवा प्राप्त करने का सबसे बड़ा आधार विश्वास माना जाता है । चेण्डलर के शब्दों में 'किसी व्यक्ति, व्यावसायिक फर्म अथवा सरकार की साख प्राप्त करने की क्षमता सम्भाव्य ऋणदाताओं के इस विश्वास पर निर्भर करती है कि ऋणी ऋण का भुगतान करने के लिए क्षम्य तथा तत्पर दोनों रहेगा ।' प्रो० चैण्डलर ने साख के तीन आधार निश्चित किए हैं—साख प्राप्त करने वाले का व्यक्तिगत चरित्र, उसकी ऋण चुकाने की शक्ति तथा उसके अधिकार में पूँजी की मात्रा, कुछ अर्थशास्त्री ऋणों की आय, ऋण की सुरक्षा अथवा जमानत समयावधि ऋण की राशि तथा ऋण के उद्देश्य को भी महत्त्वपूर्ण आधार मानते हैं । स्पष्ट है कि ये सभी आधार विश्वास को प्रभावित करते हैं । इस प्रकार साख का प्रमुख आधार विश्वास ही है ।

12.3 साख के प्रकार

साख अनेक प्रकार की होती है । इसके विभिन्न रूपों का वर्गीकरण कई आधार पर किया जा सकता है ।

1. स्रोत के अनुसार – साख की प्राप्ति के स्रोत (अर्थात् ऋणदाता) के आधार पर साख तीन प्रकार की हो सकती है–

(i) व्यक्तिगत अथवा गैर-संस्थागत साख जिसे उन व्यक्तियों से प्राप्त किया जाता है जो ऋण की लेन-देन का व्यवसाय करती है परन्तु साथ ही कुछ अन्य व्यवसाय भी करते हैं ।

(ii) संस्थागत साख जिसे बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं से प्राप्त किया जाता है जिनका व्यवसाय ऋणों की लेन-देन करना ही है, तथा

(iii) व्यापारिक साख जो व्यापारियों द्वारा वस्तुओं की बिक्री के रूप में प्राप्त की जाती है ।

2. प्रयोग के अनुसार – साख का प्रयोग उपभोक्ता, व्यवसाय, उद्योग तथा सरकार द्वारा किया जाता है । इस प्रकार उपभोक्ताओं द्वारा अपनी उपभोग सम्बन्धी आवश्यकताओं की प्राप्ति के लिए प्राप्त किए गए ऋण उपभोक्ता साख कहलाते हैं । ऐसे ऋण जिसका उपयोग उत्पादन के लिए किया जाता है, उत्पादन साख कहलाते हैं ।

Scanned with CamScanner

विभिन्न व्यावसायियों द्वारा लिये गये ऋण व्यावसायिक साख कहे जाते हैं । औद्योगिक साख का प्रयोग उद्योगपतियों द्वारा तथा कृषि साख का प्रयोग किसानों द्वारा उत्पादन में वृद्धि के लिए किया जाता है । उत्पादन के लिए प्रयोग किए गए ऋणों से लाभ यह होता है कि इनका भुगतान करने में ऋणियों को कोई विशेष परेशानी नहीं होती क्योंकि उनकी आय अथवा भुगतान करने की क्षमता में साख के प्रयोग से वृद्धि होती है । सार्वजनिक साख के रूप में सरकार द्वारा भी जनता तथा बैंकों से ऋण लिये जाते हैं जिनका प्रयोग सरकार द्वारा अपनी आय तथा व्यय के घाटे की पूर्ति के लिए किया जाता है ।

3. **अवधि के अनुसार** – यदि साख थोड़े समय के लिए दी जाए तो इसे अल्पकालीन साख कहते हैं । इसकी अवधि प्रायः 1 वर्ष तक की होती है । किसी भी समय माँग पर देय होने पर इसे माँग साख (Demand Credit) कहते हैं एक वर्ष से 5 वर्ष तक की अवधि के लिए 'मध्यकालीन साख' तथा इससे अधिक अवधि के ऋण 'दीर्घकालीन साख' कहलाते हैं ।

4. **धरोहर के अनुसार** – धरोहर अथवा जमानत के अनुसार जिन ऋणों के पीछे यथेष्ट मूल्य की सम्पत्ति जमानत के रूप में रखी रहती है उन्हें 'पूर्ण सुरक्षित साख' (Fully Secured Credit) कहते हैं । ऋणों के पीछे कोई जमानत न रखकर केवल ऋणी की व्यक्तिगत जमानत पर दी गयी साख असुरक्षित साख (Unsecured Credit) कहलाती है । इन दोनों प्रकार की साख के बीच एक प्रकार की साख ऐसी भी होती है जिसके पीछे साख के मूल्य से कम की सम्पत्ति धरोहर के रूप में रखी जाती है, इसे 'अंशतः सुरक्षित साख' (Partially Secured Credit) कहते हैं ।

12.4 साख की मात्रा को प्रभावित करने वाले तत्व

साख की मात्रा से तात्पर्य है कि किसी देश में वर्त्तमान परिस्थितियों में साख की पूर्त्ति तथा माँग कितनी हैं । साधारणतया साख की मात्रा निम्नलिखित बातों से प्रभावित होती है–

1. **लाभ की दर** – यदि ऋण से विनियोगकर्त्ता, उत्पादक तथा व्यवसायी को अधिक लाभ प्राप्त होता है, अथवा (Keynes के शब्दों में 'पूँजी की सीमांत क्षमता' (Marginal of Efficiency Capital) अधिक है तो ऋण के लिए माँग अधिक होने पर ब्याज दर ऊँची होती है तथा ऋणों की पूर्ति बढ़ती है।

2. **व्यापार की दशाएँ** – तेज़ी के काल में जब कीमतें बढ़ रही होती हैं, व्यापारी भविष्य के लिए आशावादी होते हैं । इन परिस्थितियों में ब्याज दर ऊँची होती है तथा साख का प्रसार होता है। इसके विपरीत मन्दी काल में कीमतें गिरने के कारण लाभ घटने लगता है तथा निराशा का वातावरण उत्पन्न होता है । ऋणों की माँग कम हो जाती है तथा साख की मात्रा कम होती है ।

3. **सट्टेबाजी की स्थिति** – भविष्य में कीमतें बढ़ने की आशा न होने पर सट्टा बाजार में अधिक सौदे होने लगते हैं तथा ऋणों की मांग बढ़ती है और साख का विस्तार होता है । भविष्य में कीमतें गिरने की सम्भावना होने पर ऋणों की माँग कम होती है तथा साख की मात्रा कम हो जाती है ।

4. **देश की राजनीतिक दशा** – देश में शान्ति तथा सुव्यवस्था होने से आर्थिक विकास को प्रोत्साहन मिलता है तथा ऋण की माँग एवं पूर्ति में वृद्धि होती है । अशान्ति तथा राजनीतिक अस्थिरता के वातावरण में साख की मात्रा कम हो जाती है ।

Scanned with CamScanner

5. केन्द्रीय बैंक की मौदिक नीति – साख की मात्रा पर केन्द्रीय बैंक की मौद्रिक नीति का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है । यदि सस्ती मौद्रिक नीति (Cheap Money Policy) के अन्तर्गत बैंक दर कम कर दी जाती है तो बैंकों को भी ऋण पर ब्याज दर घटानी पड़ती है, जिसके फलस्वरूप साख का विस्तार होता है । केन्द्रीय बैंक दर तथा साख नियंत्रण की नीति अपनाने पर साख की मात्रा में कमी हो जाती है ।

6. देश की मुद्रा व्यवस्था – देश की मुद्रा व्यवस्था (Monetary System) सुव्यवस्थित होने पर साख का विस्तार होता है । मुद्रा व्यवस्था में अनिश्चितता तथा मूल्यों में अस्थिरता उत्पन्न होने की स्थिति में साख की मात्रा घट जाती है ।

7. बैंकिंग प्रणाली का विकास – बैंक साख का मुख्य स्रोत होते हैं, अत: बैंकिंग प्रणाली के विकसित होने पर साख का प्रसार होगा तथा अविकसित होने पर साख की मात्रा अधिक नहीं हो सकती । अल्पविकसित देशों में बैंकिंग प्रणाली भी प्राय: अविकसित होती है तथा साख की मात्रा अपेक्षाकृत कम रहती है । उन्नत देशों में बैंकिंग प्रणाली के विकसित होने के कारण साख का अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण स्थान होगा ।

12.5 क्या साख पूँजी हैं ?

साख पूँजी के रूप में उत्पादन में सहायक है अथवा नहीं ? इस विषय पर अर्थशास्त्रियों में काफी मतभेद पाया जाता है । एक ओर तो Macleod का विचार है कि ''मुद्रा और साख दोनों पूँजी हैं । व्यापारिक साख व्यापारिक पूँजी है ।'' इस विचार का आधार यह है कि साख पत्रों का मुद्रा की तरह प्रयोग किया जाता है तथा इनकी सहायता से उत्पत्ति के अन्य साधन-श्रम, भूमि आदि खरीदे जा सकते हैं । दूसरी ओर Ricardo तथा J. S.Mill साख को पूँजी नहीं मानते । Ricardo के अनुसार ''साख पूँजी का सृजन नहीं करती है । यह तो बस इतना निर्धारित करती है कि पूँजी का प्रयोग किसके द्वारा होना चाहिए ।''

Mill ने लिखा है ''उधार देने मात्र से पूँजी का निर्माण नहीं होता, ऐसी स्थिति में तो केवल उस पूँजी का जो पहले से ही ऋणदाता के पास थी, ऋणी को हस्तांतरण होता है । साख तो केवल दूसरे की पूँजी को उपयोग करने का अधिकार है । इससे उत्पत्ति के साधनों को बढ़ाया नहीं जा सकता है ।''

अधिकतर अर्थशास्त्री साख को पूँजी नहीं मानते हैं क्योंकि (1) साख द्वारा पूँजी का केवल हस्तांतरण होता है पूँजी का निर्माण नहीं होता है । इसके माध्यम से एक व्यक्ति की पूँजी पर दूसरे को अधिकार प्राप्त होता है कभी-कभी साख अनुत्पादक संचय को हस्तांतरण द्वारा उत्पादक कार्यों में लगाती है, परन्तु इसको पूँजी का निर्माण तो नहीं कहा जा सकता । यह केवल निष्क्रिय पूँजी का सक्रिय होना है ।

(i) जिस प्रकार पूँजी और श्रम उत्पत्ति के साधन हैं, उसी प्रकार साख उत्पत्ति का एक स्वतंत्र साधन नहीं है । इसमें संदेह नहीं कि साख एक ऐसी रीति है जिससे उत्पादन में सहायता प्राप्त होती है, परन्तु स्वयं साख को उत्पादन का साधन नहीं माना जा सकता है ।

Scanned with CamScanner

(ii) साख पत्र स्वयं पूँजी नहीं होते, वे केवल पूँजी का प्रतिनिधित्व करते हैं । साख-पत्र धन के हस्तांतरण का केवल एक साधन है ।

इस प्रकार साख केवल साधन (Means) हैं साध्य (Ends) नहीं । साख की सहायता से पूँजी प्राप्त की जा सकती है, परन्तु साख स्वयं पूँजी नहीं है ।

12.5.1 साख तथा कीमतें :

साख तथा कीमतों के परस्पर सम्बन्ध के विषय में भी अर्थशास्त्रियों में बड़ा मतभेद पाया जाता है । अमेरिकी अर्थशास्त्री Walker के अनुसार साख में परिवर्तन का कीमतों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता । उसके विचार में यद्यपि साख में क्रय शक्ति (Pauchasing Power) है, परन्तु भुगतान को समाप्त करने की शक्ति (Liquidating Power) नहीं है । दूसरे शब्दों में साख के माध्यम से वस्तुएँ खरीदी जा सकती हैं, परन्तु उनका भुगतान अन्त में तो चलन (Currency) में ही करना होता है । इसके अतिरिक्त साख मुद्रा के माध्यम से क्रय-विक्रय करने पर एक क्रिया का दूसरी क्रिया से संतुलन हो जाता है, इसलिए वस्तुओं की कीमतों पर साख का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता ।

इसके अतिरिक्त J.S.Mill के अनुसार, साख की मात्रा में परिवर्तनों का कीमतों पर उसी प्रकार का प्रभाव पड़ता है जैसा कि चलन की मात्रा में परिवर्तनों का होता है । साख में क्रय शक्ति होती है जो साख का प्रसार होने पर घट जाती है, अर्थात् कीमतें बढ़ जाती हैं । इस प्रकार मुद्रा की कुल मात्रा का अनुमान लगाने में चलन की मात्रा के साथ-साथ साख की मात्रा को भी सम्मिलित किया जाता है । केन्द्रीय बैंक द्वारा साख नियन्त्रण की रीतियों द्वारा साख की मात्रा कम करके कीमतें घटायी जा सकती हैं ।

साख तथा कीमतों के सम्बन्ध में उपर्युक्त विरोधी विचारधारा का समन्वय Keynes द्वारा किया गया है Keynes के अनुसार साख का कीमतों पर प्रभाव तो पड़ता है, परन्तु इतना नहीं जितना चलन की कीमतों पर प्रभाव पड़ता है । साख-पत्र मुद्रा के स्थानान्तर (Substitute) नहीं होते, वे केवल मुद्रा का प्रतिनिधित्व करते हैं और अन्त में सभी साख-पत्रों का भुगतान विधिग्रह या मुद्रा में होता है । साख मुद्रा का निर्माण करने में बैंकों को अपने पास नकद-कोष रखने पड़ते हैं । नकद कोष बढ़ने पर साख का प्रसार होता है तथा घटने पर संकुचन। इस प्रकार साख मुद्रा का निर्माण होते ही दो प्रकार की विरोधी शक्तियाँ एक साथ कार्य करने लगती हैं—यदि साख की मात्रा बढ़ती है तो मुद्रा स्फीतिक प्रवृत्ति (Inflationary Tendency) कार्यशील होती हैं तथा कीमतें बढ़ती हैं । परन्तु इसी के साथ-साथ बैंकों के नकद कोष भी बढ़ते हैं जिसके परिणाम स्वरूप चलन में मुद्रा की मात्रा कम हो जाती है, विस्फीति प्रवृत्ति (Defletionary Tendency) उत्पन्न होती है तथा कीमतें घट जाती हैं । व्यावहारिक रूप में नकद दोषों में वृद्धि की तुलना में साख की मात्रा बढ़ती है । Keynes के अनुसार, ''साख की मात्रा में परिवर्तनों का कीमत स्तर पर प्रभाव तो पड़ता है, परन्तु इतना नहीं जितना कि चलन की मात्रा में परिवर्तनों का प्रभाव होता है ।।

Scanned with CamScanner